



“आप अपने बच्चे को सबसे अच्छी तरह से जानते हैं” - एक सीख जो मैंने कठिन तरीके से सीखी

मेरा इरादा “वो माँ” बनने के नहीं था। जो हमेशा अपनी बात पर अड़ी रहती है। जो प्रोफेशनल व्यक्तियों पर सवाल उठाती है। जो “वह ठीक है” को एक पूर्ण उत्तर नहीं मानती। लेकिन बात जब आपके बच्चे की हो, तो आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जिसकी आपने कभी कल्पना नहीं की थी - क्योंकि आपके लिए “वो जरूरी” है।

मेरे बेटे का जन्म गर्भावस्था के 28वें सप्ताह पर हो गया था। छोटा सा, नाज़ुक, और फिर भी एक योद्धा। हमने कई महीने NICU [एनआईसीयू] ¹ में बिताए, उसकी आँखों में देखने से ज्यादा मॉनीटर्स को देखते हुए, इसलिए जब अंततः हम उसे घर लाए, तो हर बार उसके किसी मापदण्ड को पूरा करने पर हम उसकी उपलब्धि को एक चमत्कार मानकर कृतज्ञ हुए। और वो – “उसके” चमत्कार थे।

लेकिन मेरे मन में कहीं हमेशा मुझे महसूस होता था कि चीज़ें ठीक वैसी नहीं हैं जैसी होनी चाहिए। जैसे-जैसे महीने बीतने लगे, मुझे देरी दिखाई देने लगी -वह अन्य शिशुओं की तरह बुदबुदाता नहीं था, जब उसकी उम्र के अन्य बच्चे घुटनों के बल चलने लगे थे तब वो बिना सहारे के बैठ भी नहीं पाता था, और आँखों से संपर्क क्षणिक था। खतरे के हर संकेत का एक ही जवाब मिलता था: “28वें सप्ताह में जन्म लेने वाला बच्चा होने पर भी यह अच्छा कर रहा है।”

शुरु में, मैंने इस बात को स्वीकार लिया। बिल्कुल, वो थोड़ा-बहुत पीछे तो रहेगा ही। मैंने अपने-आप को धीरज रखने, शिकायत करना बंद करने के लिए कहा। लेकिन मेरे भीतर, असहजता बढ़ गई।

मैं नोट्स - वीडियोज़, फोटोज़, टाइम-लाइन्स रखने लगी। हमारे नियमित बाल चिकित्सा अपॉइंटमेंट्स में मैं उन चीज़ों को अपने साथ ले जाती थी। मैंने अपनी आशंकाएँ व्यक्त कीं, शुरु में झिझकते हुए, लेकिन बाद में हर बार पुरजोर रूप से।

एक से ज्यादा बार मेरी बातों को नज़र अंदाज किया गया।

“वह अन्य बच्चों के बराबर आ जाएगा।”

“लड़के धीमे होते हैं।”

“आप इस बारे में बहुत ज्यादा सोच रही हो।”

“कुछ माताएँ बस सहायता अनुदान राशि प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन(डायग्नोसिस) चाहती हैं।”

वो अंतिम बात चुभ गई।

मैं अनुदान राशि नहीं चाहती थी -मैं “उत्तर” पाना चाहती थी। मार्गदर्शन चाहती थी। मैं चाहती थी कि कोई ये कहे कि “हाँ, मुझे भी वो नज़र आ रहा है जो तुम्हें दिख रहा है। चलो इसकी आगे और जाँच करते हैं।” लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कम से कम, शुरुआत में तो नहीं।

अंततः, मेरा सब्र का बाँध टूटने की कगार पर आ गया। मैंने किसी अन्य चिकित्सीय पेशेवर की राय लेने के लिए अपनी तलाश शुरू की। मैंने अपनी आँखें थक जाने तक बाल विकासात्मक शोधों को पढ़ने में घंटों लगाए। इसलिए नहीं कि मुझे डॉक्टरों पर विश्वास नहीं था - बल्कि इसलिए कि मुझे लगा कि वे मेरी बात पर विश्वास नहीं कर रहे हैं।

आखिरकार, लगभग दो साल तक अपनी बात मनवाने के प्रयास करने और उसे पहली बार मिर्गी का दौरा पड़ने के बाद, पहली बार हमारा मूल्यांकन (डायग्नोसिस) किया गया: सार्वभौमिक विकासात्मक विलंब, सैरिबल पाल्सी और मिर्गी (ऐपिलेप्सी)। इससे सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं मिले, लेकिन इससे हमें एक रूपरेखा मिल गई। और उसके साथ हमें शुरु में हस्तक्षेप, थैरेपीज़, और उस तरह की सहायता मिली जिसके लिए मैं याचना कर रही थी।

मुझे याद है कि कैसे मैं हमारे बेटे के नए बाल चिकित्सक के सामने पहले दिन रोने लगी थी - मूल्यांकन (डायग्नोसिस) की वजह से नहीं बल्कि इसलिए कि आखिरकार किसी ने उसमें “वो चीज़ें देखीं”। “हम” उनको दिखाने गए और उन्होंने मुझसे कहा कि अब मैं एक माँ होकर अपने बेटे की देखभाल कर सकती हूँ, चिकित्सीय संयोजन का कार्य वो करेंगी।

सालों बाद, अब, वह अपने सुंदर, अनोखे तरीके से फल-फूल रहा है। अभी भी उसकी अपनी चुनौतियाँ हैं, लेकिन उसने इतनी प्रगति कर ली है जितनी किसी ने अपेक्षा नहीं की थी। और इस सब के दौरान, मैंने बाकी सब चीज़ों से ऊपर एक बात सीखी है:

“आप अपने बच्चे को सबसे अच्छी तरह से जानते हैं।”

वो वाक्यांश बस बोलने की एक लाइन लगता था। लेकिन अब, मैं इस बात को दृढ़तापूर्वक सच मानती हूँ। कोई भी अन्य व्यक्ति आपके बच्चे के साथ उतना समय व्यतीत नहीं करता है। आपको दिन रात जो चीज़ें दिखाई देती हैं वो किसी भी अन्य व्यक्ति को नज़र नहीं आती हैं। आपकी अंतरात्मा की आवाज़ “वास्तविक” होती है, और “सत्य” होती है।

यदि आप इसे पढ़ रहे एक ऐसे माता-पिता हैं जिन्हें महसूस हो रहा है कि वे निष्प्रभाव ही चिल्ला रहे हैं, मुझे वो आवाज़ बनने दीजिए जो प्रतिध्वनित होती है: “प्रयास करते रहिए।” खुद पर भरोसा रखिए। प्रश्न पूछने से मत डरिये। ज़ोर देकर अपनी बात कहने में मत डरिये। आप हठी नहीं हैं-आप “समर्पित” हैं।

और प्रोफेशनल लोगों से कहना चाहूँगी: कृपया लोगों की बात सुनें। कृपया माताओं, पिताओं और देखभालकर्ताओं की बातें सुनें जो उन्माद में नहीं बल्कि दिल की बात लेकर आपके पास आते हैं। हमें कोई वर्गीकरण या वक्तव्य नहीं चाहिए। हम अपने बच्चे को ऐसा जीवन देने के लिए हो सके उतना श्रेष्ठ अवसर देना चाहते हैं जिसका वो अधिकारी है।

अपनी आवाज़ में वापस आत्मविश्वास लाने में मुझे लंबा समय लगा। काश, मैं जल्दी ऐसा कर पाती। लेकिन अब मैं आवाज़ उठाती हूँ - केवल मेरे बेटे के लिए ही नहीं, बल्कि उन हर माता-पिता के लिए जो अब भी इस तलाश में हैं कि कोई उनकी बात सुनें।

और मैं आपसे, अपने सीने में चिंता और मन में प्रश्नों के साथ इसे पढ़ रहे लोगों से कहना चाहती हूँ कि:

आप कल्पना नहीं कर रहे हैं।

आप अकेले नहीं हैं।

आप अपने बच्चे को सबसे अच्छी तरह से जानते हैं।

इस बात पर भरोसा रखें। ये बात किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा मायने रखती है।

प्रस्तुतकर्ता क्लेयर, एक माँ जिसने चुप रहना स्वीकार नहीं किया।